॥ आरती ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

जाके बल से गिरवर काँपे ।

रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई ।

संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

दे वीरा रघुनाथ पठाए ।

लंका जारि सिया सुधि लाये ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।

जात पवनसुत बार न लाई ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

लंका जारि असुर संहारे ।

सियाराम जी के काज सँवारे ॥

लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे ।

लाये संजिवन प्राण उबारे ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

पैठि पताल तोरि जमकारे ।

अहिरावण की भुजा उखारे ॥

बाई भुजा असुर दल मारे ।

दाहिने भुजा संतजन तारे ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें ।

जय जय जय हनुमान उचारें ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई ।

आरती करत अंजना माई ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

जो हनुमानजी की आरती गावे ।

बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥

लंक विध्वंस किये रघुराई ।

तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥

~ आरती कीजै हनुमान लला की ~

दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

-: श्री हनुमान जी की जय हो :-